एपिसोड–22

हल्दी घाटी की नई लड़ाई

अनुसंधान और आलेख : डॉ. रमेश दत्त शर्मा

पात्रा

1.	दादा जीः		ग्रामीण परिवेश की पूरी जानकारी रखने वाला बूढ़ा आदमी
2.	विक्रम	:	वनस्पतिविज्ञान का शोध छात्र
3.	किरन	:	वनस्पतिविज्ञान की शोध छात्रा
4.	मेधा (नातिन)	:	11 वर्ष की बालिका
5.	प्रयास (नाती)	:	12 वर्ष का उत्सुकता से भरा बालक
6.	त्रिलोक	:	
7.	कल्लू	:	
8.	दादी	:	
9.	डॉ.रामाराव	:	
10.	आदिवासी मुखिया	:	

(नाश्ते की मेज पर)

दादा जी : भई वाह आज तो नाश्ते में बड़ी लजीत चीजें बनी हैं – आलू के परांठे। टमाटर की रसीली सब्जी। हरे धनिए की चटनी।

प्रयास : मैं तो बस वही खाऊंगा जो मक्की की बनी होती है और दूध में चीनी मिलाकर उसमें डालकर खाते हैं।

मेधा : फिर नाम तो बताओ कि क्या ?

प्रयास : बस, मैं नाम ही तो भूल जाता हूं चीजों का।

विक्रम : उसका नाम है कार्न लैक्स और जानते हो मक्का किस देश की देन है ?

मेधा : किसकी देन है मक्का, विक्रम चाचा ?

विक्रम : मैक्सिको की। वहां जंगलों में आज भी कई तरह की जंगली मक्का पाई जाती है।

दादा जी : और परांठों में जो आलू भरा है वह कहां से आया। आलू तो अपने ही देश का होगा।

विक्रम : नहीं दादा जी। आज हमें नहीं लगता कि आलू पराया होगा। लेकिन आलू की जन्मभूमि है दक्षिण अमरीका में स्थित एण्डीज पहाड़ियां, जहां आज भी तरह–तरह के जंगली आलू मिलते हैं।(किरन का प्रवेश)

दादा जी आओ किरन ओ। कहां रह गई थीं तुम।

किरन : बस ! कुछ लिखना–पढ़ना चल रहा था।

दादा जी : देखो खूब लिखो–पढ़ो, मगर नाश्ता ठीक टाइम पर कर लिया करो।

किरन : बिलकुल ठीक कहा आपने दादा जी। प्रोफेसर एम.एस.स्वामिनाथन् तो कहते हैं कि सुबह का नाश्ता करते ही हम आधी दुनिया के कर्जदार होते हैं।

विक्रम : अब देखो आज के ही नाश्ते में आलू एण्डीज पहाड़ियों से आया। इसीलिए वहीं पेरू की राजधानी लीमा में आलू का अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधानसंस्थान खोला गया है। टमाटर भी वहीं से आया है।

किरन : हमारे देश में सबसे पहले सर टामस रो को जहांगीर ने अजमेर में जो दावत दी थी, उसमें सबसे पहले आलू परोसा गया था।

दादा जी : यानी राजा–महाराजाओं की सब्जी था आलू। और आज हम सोच ही नहीं सकते कि एक जमाना था जब हमारे देश में आलू होता ही नहीं था।

विक्रम : इसी तरह मक्का मैक्सिको से, गेहूं मेसोपोटामिया से, चटनी की हरी मिर्च पुर्तगाल से।

दादा जी : पर भइया दूध–घी तो अपना देसी ही है।

किरन : सो, तो टमाटर की रसीली सब्जी में पड़ी हल्दी भी अपनी ही है।

विक्रम : अपनी क्या है, बस पराई होते–होते बच गई।

दादा जी : अच्छा हल्दी को कौन ले जा रहा था ?

किरन : दादा जी, कुछ अपने ही लोग लो हल्दी के गुणों से परिचित थे और अब अमरीका में जा बसे हैं।

विक्रम : मार्च 1995 में मिसीसिपी यूनिवर्सिटी के मेडीकल सेंटरमें काम कर रहे दो भारतीय वैज्ञानिकों को हल्दी के चोट और घाव ठीक करने के गुणों का पेटेंट दिया गया।

किरन : जब भारत में हमारे वैज्ञानिकों को इसका पता चला तो इसका विरोध करने की ठान ली गई।

विक्रम : सी एस आई आर यानी वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. आर.ए.मशेलकर की अध्यक्षता में एक टीम बनाई गई।

किरन : हल्दी के बारे में तमाम भारतीय दस्तावेज इकट्ठे किए गए।

विक्रम : फिर हल्दी पर अमरीकी पेटेंट के खिलाफ वहीं की अदालत में दावा ठोंका गया।

किरन : वहां प्राचीन संस्कृत ग्रंथों के हवाले से हरिद्रा यानी हल्दी के गुणों का ब्यौरा दिया गया।

विक्रम : बताया गया कि किस तरह भीतरी और बाहरी दोनों तरह की चोटों में दूध में हल्दी मिलाकर पिलाई जाती है – बड़े पुराने जमाने से।

दादा जी : कहीं फोड़ा–फुंसी हो जाए तो हल्दी की पुल्टिस बनाकर बांध देते हैं। सारा पस खींच लेती है।

किरन : घाव हों तो उनको भी भर देती है।

विक्रम : यही नहीं दादा जी। हैदराबाद में हमारी राष्ट्रीय पोषण अनुसंधानशाला ने पता लगाया है कि हल्दी के उपयोग से कैंसर जैसी बीमारी से भी बचाव किया जा सकता है। इसकी पुष्टि पश्चिम के वैज्ञानिकों ने भी की है।

दादा जी : तभी वे लोग हल्दी को पेटेंट कराके अपनी बनाना चाहते थे।

मेधा : ये तो एक तरह से चोरी हुई।

किरन : बिलकुल । इसी को बायोपिरेसी या जैवदस्युता कहते हैं। अमरीकी इसमें सबसे आगे है।

विक्रम : उनके यहां जैवदस्युता की बड़ी पुरानी परंपरा है।

किरन : जब अमरीकी राष्ट्रपति जैफरसन इटली में राजदूत थे तो वहां की चावल की किस्म 'लम्बार्टी' के बीज अपनी जेब में भरकर चुरा लाए थे। पकड़े जाते तो फांसी पर चढ़ा दिए जाते। मगर राजदूतों की तलाशी नहीं ली जाती।

किक्रम : जब भी अमरीका सेना किसी देश को जीतती है, तो उसके साथ एक बॉटनिस्ट यानी वनस्पति विज्ञानी जरूरत जाता है। ऐसा ही एक वैज्ञानिक जापानी को हटाने के बाद सेना के साथ गया और वहां से 'नोरिन–10' नामक गेहूं की बौनी किस्म के बीज ले आया।

किरन : आज सारी दुनिया में गेहूं में उसी किस्म के बौनेपन का जीन इस्तेमाल किया गया है। अगर जापान को बौद्धिक सम्पदा के अधिकार के तहत इस 'नोरिन–10' गेहूं की रॉयल्टी देनी पड़े तो अमरीका का सारा खजाना खाली हो जाएगा फिर भी पूरा भुगतान नहीं हो पाएगा।

विक्रम : वही अमरीका आज सारी दुनिया के विकासशील देशों की जैवविविधता हड़पना चाहता है।

किरन : हमारे देश के नीम, आंवला, मुहआंवला, अनार, सलाह, दूधी, गुलमेहंदी, बैंगन, करेला, जामुन, रंगून की बेल, अरण्ड, विलायती शीशम, चमकुरा और बासमती को पेटेण्ट कराने की कोशिश कर चुका है।

दादा जी : बासमती चावल की भी। यह तो हजारों साल से यहीं उगाया जाता है।

विक्रम : अमरीका की एक कंपनी है – 'राइसटैक'। इसने दावा किया कि उसने बासमती के पौधे में कुछ ऐसे सुधार किए हैं, जो उसमें पहले नहीं थे। इसलिए वह पेटेंट लेगी।

किरन : उसे पेटेंट मिल भी गया। फिर भारत सरकार ने इसका विरोध किया।(त्रिलोक और कल्लू का प्रवेश)

दादा जी : आओ त्रिलोक और कल्लू। आज कैसे रास्ता भूल गए।

त्रिलोक : बस खबर लगी कि विक्रम भइया और किरन भाभी आई हैं, तो हम भी आ गए।

कल्लू : मेधा और प्रयास बासमती चावल का खेत देखना चाहते थे, वह भी दिखाना था।

दादा जी : यहां कहां है बासमती के खेत ?

कल्लू : यहां नहीं दादा जी । यहां से थोड़ी दूर पर करनाल के पास तटावटी गांव है। तरावटी के सब किसान बासमती उगाते हैं।

त्रिलोक : वहां से मालगाड़ी भर–भरकर, बासमती चावल विदेशों को निर्यात किया जाता है।

विक्रम : आज तो बड़ी समझदारी की बात कर रहा है त्रिलोक।

कल्लू : मेरी सोहबत में रहकर सुधर गया है।

त्रिलोक : तुम्हारी सोहबत में तो बिगड़ता था। यह तो दादा जी और विक्रम भइया की सोहबत ने सुधारा है।

मेधा : अब चलो भी त्रिलोक चाचा नहीं तो देर हो जाएगी।

दादा जी : चलो सब चलते हैं।(गाड़ी स्टार्ट करने की आवाज)(गाड़ी में बातचीत जारी रहती है)

त्रिलोक : मैं जब आया तो मैंने कुछ विरोध करने की बात सुनी थी विक्रम भइया।

विक्रम : ठीक ही सुनी थी। अमरीका की एक कंपनी हमारे बासमती चावल पर कब्जा करना चाहती थी।

कल्लू : चल त्रिलोक उस कंपनी वाले की पिटाई कर आते हैं। भला हमारे बासमती को वह अपना कैसे सकता है ।

किरन : पिटाई तो हो गई। वह कंपनी मुकदमा हार गई। बासमती उसके चंगुल में जाने से बच गई।

विक्रम : जब कंपनी पेटेंट नहीं ले पाई तो उसने बासमती से मिलते–जुलते नाम 'कासमती' और 'टैक्समती' रख लिए और 'कासमती' पर ताजमहल की तसवीर लगाकर अपना चावल बेचने लगी।

किरन : फिर इसका भी विरोध किया गया, तब उसने यह बंद किया।

दादा जी : भई यह बताओ, यह मुकदमा हम जीते कैसे ?

किरन : मुकदमा तो जीतना ही था। डॉ. मशेलकर की टीम ने 5 हजार से ज्यादा पन्नों का दस्तावेज तैयार किया था, यह बताने के लिए कि बासमती हमारा है।

प्रयास : इत्ता बड़ा दस्तावेज !

दादा जी : भई विक्रम। इसकी मुख्य–मुख्य बातें तो बताओ।

विक्रम : पहली बात तो दादा जी यही है कि धान विश्व को भारत का ही दान है। असम की पहाड़ियों में जंगली धान आज भी मिलते हैं। वहां जैपोर में ऐसा जंगली धान होता है जो पौधे पर ही पक जाता है।

कल्लू : उसे तो लाकर यहां उगाना चाहिए। नहीं तो धान से चावल निकालने के लिए बड़ी कुटाई करनी पड़ती है।

त्रिलोक : और वक्त पर इकट्ठे नहीं किए तो सारे चावल झड़कर मिट्टी में मिल जाएंगे, सो नहीं सोचा।

कल्लू : ये उलटी बातें तेरी ही उलटी खोपड़ी में आती हैं।

विक्रम : अड़तीस जगह खुदाई में धान और चावल मिले हैं अपने देश में। इससे पता चलता है कि बड़े पुराने जमाने से धान की यहां खेती होती थी।

किरन : भाषा विज्ञान से भी प्रमाणित होता है।

मेधा : वह कैसे ?

किरन : ऐसे कि अंग्रेजी का 'राइस' शब्द तमिल भाषा के 'अरिषि' से निकला है। 'अरिषि' अरबी भाषा में 'अल–रुज़' हो गया। फिर स्पेनिश में 'अरोज़'; इटैलियन में 'रिसो'; जर्मन भाषा में 'रीइज़'; फ्रेंच में 'रिज़' और ग्रीक में 'ओरिज़' तथा लैटिन में 'ओराइज़ा' और फिर अंग्रेजी में 'राइस'।

कल्लू : भई वाह। कहां तमिल नाडु और कहां इंगलैंड।

विक्रम : इसी तरह संस्कृत का 'वृहि' तेलगु में 'वारी' हो गया और भारतीय व्यापारियों के साथ अफ्रीका के पूर्वी तट पर मेडागास्कर जा पहुंचा। वहां 'वारी' तौलने की इकाई भी बन गई है।

किरन : प्राचीन विद्वानों में पाणिनि और कौटिल्य तथा हेवन सांग ने तथा ग्रंथों में 'कश्यप संहिता' तथा 'तैनरीय संहिता' में धान की किस्मों का वर्णन है।

विक्रम : भारत से धान किस तरह खास तौर से बौद्ध धर्म के साथ फैला है, इसके भी प्रमाण मिलते हैं कि कब, कहां पहुंचा। अब तो दुनिया के ढाई अरब के करीब लोग यानी हर तीसरा आदमी चावल खाकर ही पेट भरता है।

दादा जी : यह तो बड़े ही आश्चर्य की बात है। भारत का कर्ज तो पूरी दुनिया मिलकर भी नहीं चुका सकती।

मेधा : दादा जी बड़ी बढ़िया खुशबू आ रही है।

त्रिलोक : हां, बिटिया यह बासमती धान के खेतों से आ रही है। अब धान पकने लगे हैं। कुछ ही दिनों में कटाई शुरू हो जाएगी।

किरन : डूबते सूरज की लालिमा में नहाए धान के ये खेत कितने मानभावन लग रहे हैं।

विक्रम : अमरीका की वह कंपनी क्या जाने किस तरह हमारी किसान महिलाएं कड़ी धूप में घुटने भर पानी में घंटों खड़े होकर रोपाई करती हैं कीड़े और बीमारियों से फसल का बचाव किया जाता है। खरपतवारों को निराई–गुड़ाई करके निकाला जाता है। तब जाकर इतनी अच्छी फसल पैदा होती है।

दादा जी : देखो तो मेधा और प्रयास तो खेतों के बीच कैसे फुदक रहे हैं।

किरन : अब भी अमरीकी कंपनियों की निगाहें हमारी जड़ी–बूटियों पर लगी हैं। वे हमारे परंपरागत ज्ञान को भी चुराना और भुनाना चाहते हैं।

विक्रम : वे पर्यटक बनकर आते हैं और जहां–तहां से पौधे या उनके पत्ते, तना, जड़ वगैरह के नमूने ले जाते हैं। इनको परखनली में पनपाकर पूरा पौधा उगाया जा सकता है।

किरन : दक्षिण भारत के जंगलों में एक वृक्ष मिलता है जिसे स्थानीय भाषा में तेतू लकडा और वनस्पति विज्ञान में मॉथेटोडाइटीज़ फीटिडा बोलते हैं। इसकी टहनियों के काढ़े से कैंसररोधी दवा बनती है। यहां से टहनियां 9 रुपये किलो ले जाते हैं और उनसे बनाई गई दवा 15000 रुपये प्रति किलोग्राम बिकती है।

त्रिलोक : इतना फर्क।

विक्रम : तभी तो इन सब पेड़–पौधों को बचाना जरूरी है। जो फायदा वे उठा रहे हैं, वे हम उठा सकते हैं।

किरन : हमारे देश में 45000 प्रजातियों के फूल–पौधे हैं। विश्व के 12 मैगा डाइवर्सिटी वाले देशों में से एक भारत भी है।

विक्रम : हमारे आदिवासी ही करीब 9500 पौधों का इस्तेमाल करते हैं।

किरन : इनमें से 300 खाने के काम आते हैं।

विक्रम : 7500 जड़ी–बूटियों के काम आते हैं।

विक्रम : 400 पौधों से पशुओं का चारा दाना मिलता है।

किरन : लगभग 100 पौधे ऐसे हैं, जिनसे इत्रा, खुशबूदार तेल अगरबत्ती और धूपबत्ती वगैरह बनती हैं।

विक्रम : 300 पौधों में रोगनाशी और कीटनाशी गुण पाए गए हैं।

किरन : करीब 700 पौधे ऐसे हैं जिनसे इमारती लकड़ी और जलाऊ लकड़ी मिलती है।

मेधा : क्या हमने अपने सभी पौधों का पता कर लिया है ?

किरन : नहीं। अभी तो घने जंगलों में पता नहीं क्या–क्या छुपा है।

विक्रम : जैसे कि सुपर गम वाला वह पोधा जिसे खोजने में मेरी जान ही चली जाती।

त्रिलोक : यह क्या किस्सा है विक्रम भाई।

किरन : लो सुनो ध्यान से। वह तो उस आदिवासी मुखिया का धन्यवाद जिसने उस समय विक्रम की जान बचा दी। लो सुनो वह किस्सा।(दृश्य परिवर्तन)(बिजली कड़कने की आवाज। बारिश की टप–टप और फिर तेज वर्षा)

विक्रम : प्रोफेसर साहब ये तो बरसात शुरू हो गई। आप किरण को ले जाओ वापस। मैं जरा देखकर आता हूं।

रामाराव : नहीं विक्रम तुम भी वापस चलो। बरसात थमने के बाद सभी साथ–साथ निकलेंगे।

किरन : यह ठीक है। विक्रम लौट आओ।

विक्रम : (दूर से) नहीं नहीं। मैं तो अब खोजकर ही लौटूंगा उस पौधे को जो काई की तरह पानी में डूबी चट्टानों पर जमा रहता है और पानी उतरने पर ही फूल खिलाता है।

रामाराव : वह पौधा एक सुपरगम बनाता है। इसी पक्के गौंद से चट्टान पर ऐसे चिपक जाता है कि झरने की तेज धारा भी उसे नहीं हिला पाती।

किरन : लेकिन विक्रम संभल के। तुम पौधे की तरह सुपरगम नहीं पैदा करते। तुम्हें तेज धारा बह ले जाएगी। विक्रम–विक्रम (घबराकर आवाज लगाती है) प्रोफेसर साहब विक्रम कहां गया। नजर ही नहीं आता। (बिजली के कड़कने और तेज बारिश और तूफान की आवाजों के बीच किरन की चीख) विक्रम तुम कहां हो ?

रामाराव : लगता है किरन उसका पांव फिसल गया और वह झरने में गिर गया है। तुम यहीं रुको मैं देखता हूं।

किरन : आप ये छाता ले लो।

रामाराव : नहीं छाता तुम रखो। मैंने बरसाती डाली हुई है। घबराना मत। विक्रम जिद्दी तो है पर हिम्मतवाला भी है। उसे कुछ नहीं होगा।

किरन : मुझे तो बड़ा डर लग रहा है। उसे कुछ हो गया तो। आवाज लगा दी है विक्रम ! विक्रम ! तुम कहां हो विक्रम !

रामारावत : विक्रम तुम कहां हो ? (नीचे खिसकने की आवाज)(विक्रम की आवाज दूर से आती है)

विक्रम : मैं यहां हूं। झरने के बिलकुल नीचे।

रामाराव : (जोर से) तुम्हें कहीं चोट तो नहीं लगी ?

विक्रम : (चीख कर) नहीं,थोड़ी से घिस्सट लगी है। मगर मुझे वह पौधा मिल गया है। इधर कई चट्टानों पर उग रहा है।

रामाराव : (जोर से) ठीक है। अब वापस आ जाओ। पौधे का नमूना फिर ले लेंगे।

विक्रम : (जोर से) मैं तो अभी ला रहा हूं। (पानी में गिरने की आवाज आती है – छपाक)

रामाराव : (जोर से) किरन लगता है विक्रम फिर फिसल गया।(बारिश और बिजली की आवाजों के बीच ही ये संवाद जोर–जोर से चीखते स्वरों में)(ऊपर से किरन चीखती है)

किरन : विक्रम, विक्रम। ऊपर आ जाओ। (किरन रुआंसी हो जाती है)

रामाराव : (जोर से) किरन तुम वापस लौट जाओ। मैं विक्रम को लेकर आता हूं।(हवा में किरन की आसवाज गूंजती रहती है बारिश और बिजली की कड़क के बीच) विक्रम तुम कहां हो। विक्रम आ जाओ। विक्रम !(आवाज दर्द भरी चीख में बदल जाती है) विक्रम !(दृश्य परिवर्तन)(बारिश थम गई है। बिजली का कड़कना बंद है)

रामाराव : इधर झोंपड़ी में ले आओ विक्रम को। चारपाई पर लिटा दो। ऐसे नहीं। उलटा कर दो। पानी भर गया होगा तो निकल जाएगा। इधर आग जला दो। थोड़ी गरमी मिलनी चाहिए।

विक्रम : (कराहता है) मैं कहां हूं।

रामाराव : तुम हमारे पास हो (तभी तेजी से किरन आती है)

किरन : विक्रम, विक्रम। तुम आ गए विक्रम। तुम ठीक तो हो विक्रम (रोने लगती है)

विक्रम : (अटक–अटक कर बोलता है) मै ठीक.....क.....हूं। तुम.....कैसी.....हो किरण। प्रो. साहब (बेहोश हो जाता है)

किरन : (चीखती है) प्रोफेसर साहब ये तो फिर बेहोश हो गया।

प्रोफेसर : मुखिया जी आप ही कुछ करो। इस जंगल में आप ही बचा सकते हैं विक्रम को।

मुखिया : अभी एक बूटी लाता हूं। इसे सुंघानी होगी।(जाता है और जल्दी ही आ जाता है)

मुखिया : यह लो । सुंघा दो।

किरन : लाओ मैं सुंघाती हूं।(लेकर सुंघाती है)

विक्रम : (बुदबुदाता है) बूटी मिल गई चट्टान वाली बूटी। कितनी जोर से चिपकी.....!

मुखिया : (हिलाता है) होश में आओ। होश में आओ विक्रम।

विक्रम : किरन। प्रोफेसर साहब।(उठ कर बैठ जाता है)

किरन : बैठो मत लेटे रहो।

विक्रम : नहीं अब मैं ठीक हूं।

रामाराव : इन मुखिया जी ने तुम्हारी जान बचायी है।

विक्रम : राम–राम मुखिया जी।

मुखिया : बचाने वाला तो ईश्वर है। मैंने देखा कि झरने में कोई बहता आ रहा है। पानी ज्यादा गहरा नहीं था। मैं इसे खींच लाया। बेहोशी दूर करने वाली बूटी भी मिल गई। बच गया।

मुखिया : इधर इस बूटी को मांगने बहुत लोग आए। रुपए देने लगे।

रामाराव : आपने क्या किया ?

मुखिया : हमने सबको भगा दिया। हमने कहा, हमारे पुरखों की देन है। उनकी विरासत है। धरोहर है। हम इसे बेचेंगे नहीं।

विक्रम : बहुत अच्छा किया आपने। अगर आप जैसे ही सब लोग हो जाएं तो हमारी यह विरासत बच जाएगी।

मुखिया : हमने तो ंगल भी नहीं काटने दिया किसी को।

किरन : कैसे बचाया ?

मुखिया : चिपक गए पेड़ों से। कह दिया पहले हमें काटो, तब पेड़ काटना।

रामाराव : आपने जंगल बचाया तभी तो आपकी हरी विरासत बची रही।

विक्रम : अब हम आपको सिर्फ एक पौधे से ही मालामाल कर देंगे।

मुखिया : हम मालामाल नहीं होना चाहते। हम तो चाहते हैं कि रोटी, कपड़ा, मकान की बुनियादी जरूरतें पूरी हो जाएं। बस जैसे हम हैं वैसे ही हमें और हमारे जंगल को जिंदा रहने दो। यह जंगल ही हमारा माई बाप है।

रामाराव : वाह मुखिया वाह। आप से मिलकर तबियत खुश हो गई।(दृश्य परिवर्तन का संगीत)

कल्लू : क्या विक्रम भाई। बस बच ही गये।

दादा जी : ऐसी भी क्या बात है, जो एक काई के लिए जान खतरे में डाल दी।

किरन : अरे, दादा जी जब तक अपनी जैवविविधता से हमें ऐसा प्यार नहीं होगा, तब तक हमारी चीजों को वो ले जाते रहेंगे।

विक्रम : अब अपनी हल्दी से प्यार था तो ले आए, वरना हार ही गये थे हल्दी की लड़ाई।

प्रयास : चाचा यह हल्दी घाटी की लड़ाई तो महाराणा प्रताप हार गये थे न !

मेधा : अरे बुद्धू। चाचा हल्दी की बात कर रहे हैं न कि हल्दी घाटी की।

विक्रम : अरे बेटा, यह भी नयी हल्दी घाटी की लड़ाई है, इसमें हमारी सारी सम्पदा ही दांव पर है, जिसे हमें जान पर भी खेल कर बचाना है,क्योंकि जबतक यह जैवविविधता है तबतक हमारा अस्तित्व है।

कल्लू : अरे भईया अब न जायेगी हल्दी और न हारेंगे हल्दी घाटी।

दादा जी : चलो भई जब जोगो तभी सवेरा।

त्रिलोक : चलो भई, अब तो इस जैवविविधता की खातिर मैं सोऊंगा ही न।

विक्रम : भई फिर तो हमेशा सवेरा रहेगा, और कोई हमारी सम्पदा नहीं ले पायेगा।

कल्लू : हां, त्रिलोक जैसा पहरेदार जो है।

(सब हंसते हैं)

,,,